पर्यावरण संरक्षण और मानवीय मूल्य

डा0 उमेश प्रसाद यादव
एसोसिएट प्रोफेसर बी0एड0 विभाग,
ज0ला0ने0स्मारक पी0जी0 कालेज,
महाराजगंज

जैसी भूमि होती है वैसा व्यक्ति होता है। इस कथन का सीधा और सरल अर्थ है कि व्यक्ति जहां रहता है और काम करता है उस स्थान की भौगोलिक दशाओं का उसके खान पान, रहन सहन, स्वभाव आदि पर असर पड़ता है। इस प्रकार हम देखते हैं कि व्यक्ति और उसके पर्यावरण में घनिष्ठ सम्बन्ध होता है। ओइम ने लिखा है, "मनुष्य पृथ्वी का बच्चा है इन्हें एक दूसरे से अलग नहीं किया जा सकता है।" यह उदाहरण इस बात का प्रमाण है कि मनुष्य और प्रकृतिक वातावरण में घनिष्ठ सम्बनध है। व्यक्ति प्रकृति की गोद में जन्म लेता है और उसका सम्पूर्ण जीवन इस प्राकृतिक पर्यावरण में विकसित होता हैं।

पर्यावरण एक व्यापक सग्प्रत्यय है। इसको समझने के लिए हमे पर्यावरण के शाब्दिक तथा वास्तविक अर्थ को समझना होगा। पर्यावरण के शाब्दिक अर्थ की बात करें तो पर्यावरण शब्द दो शब्दों परि तथा आवरण से मिलकर बना है जिसमें परि का अर्थ है चारों ओर तथा आवरण का अर्थ है ढके हुए या घेरे हुए। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि पर्यावरण का तात्पर्य उन तथ्यों या घटकों से है जो हमें चारों ओर से घेरे हुए हैं और जो हमें प्रभावित करता है। पर्यावरण के वास्तविक अर्थ की बात करें तो पर्यावरण से आशय उन समस्त प्राकृतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक तथा भौतिक परिस्थितियों के योग से है जो मनुष्य को चारो ओर से न केवल घेरे रहती है वरन उसके जीवन को उल्लेखनीय रुप से प्रभावित करती है तथा स्वयं भी मानव द्वारा प्रभावित होती हैं। पर्यावरण के घटक जल वायु मृदा आदि जीवमण्डल के विभिन्न जीवों को आधार प्रदान करते है, उन्हें आश्रय देते हैं, उसके विकास तथा संवर्धन हेतु आवश्यक दशायें प्रस्तुत करते हैं एवं उन्हें प्रभावित करते हैं। पर्यावरण के जैविक तत्व वनस्पतियों, जन्तु सूक्ष्म जीव तथा मनुष्य आदि पर्यावरण के जीवमण्डल की रचना करते हैं। पर्यावरण के सांस्कृतिक तत्व (धार्मिक कियाकलाप, संस्कार, रहन सहन, खान पान, व्यवसाय, सामाजिक मूल्य, शिक्षा, कला, आर्थिक एवं राजनीतिक स्थिति आदि) सांस्कृतिक पर्यावरण का निर्माण करते हैं।

18वीं शताब्दी से मानव सभ्यता का विकास तीव्र गति से हुआ है। वैज्ञानिक अविष्कारों तथा औद्योगीकरण के परिणामस्वरुप मनुष्य की आवश्यकताओं में तेजी से वृद्धि होने लगी। मनुष्य अपनी इन आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए प्राकृतिक संसाधनों का अविवेकपूर्ण तरीके से दोहन कर रहा है जिसके कारण सम्पूर्ण जगत में इस बात की चिन्ता होने लगी है कि कहीं ये प्राकृतिक संसाधन समाप्त हो जाए और हमारी आने वाली पीढ़ी इन प्रकृति के अनमोल खजाने से वंचित न हो जाए। आज की औद्योगिक गतिविधियों के कारण हमारा जल मण्डल, वायुमण्डल प्रदूषित होता जा रहा है। जिसके कारण वायु प्रदूषण बढ़ता जा रहा है जिसके कारण सम्पूर्ण जगत में प्रतिवर्ष लगभग 70 लाख लोगों को अपने जीवने से हाथ धोना पड़ता है। जनसंख्या विस्फोट के कारण आज हमारे सामने गन्दगी तथा बेकारी जैसे समस्याएं सामने आ रही है। जिसका समस्त मानव जाति तथा अन्य जीवधारियों के जीवन पर संकट खड़ा हैं। यदि इस

Scanned with OKEN Scanner